एकता की बुनियाद पर

दोहरा ख़तरा

झूठी ख़बरों और नफ़रती बयान के बीच अवाम

[ये मुल्क इस समय ग़लत सूचना और भड़काऊ भाषण के बुरे दौर से गुज़र रहा है. नेता लंबे समय से इन दो हथियारों का इस्तेमाल जनता को एक दूसरे के ख़िलाफ़ हथियार में बदलने के लिए कर रहे हैं.]

दुष्प्रचार का कारोबार

फ़ेक न्यूज़ हमेशा योजना के साथ तैयार की जाती है और फिर ये मुंह ज़बानी के ज़रिए आम जनता में तेज़ी से फैल जाती हैं. ये ख़बरें मीडिया, सोशल मीडिया, न्यूज़ चैनल्स सहित संगठित आईटी सेल के ज़रिए फैलाई जाती हैं. इसमें ऐतिहासिक तथ्यों के साथ ही वर्तमान से जुड़ी सूचनाओं को भी तोड़-मरोड़ कर या कलेवर बदलकर पेश किया जाता है. अपनी दलील को मज़बूत करने के लिए कई बार नक़ली वैज्ञानिक दावे भी गढ़ लिए जाते हैं. झूठी ख़बरों का कारोबार संगठित तौर पर बहुत तेज़ी से फल-फूल रहा है. इससे आपस में भ्रम, अविश्वास और अज्ञानता को तो बढ़ावा मिलता है, साथ ही बहुत बार ये ख़तरनाक हिंसा, लींचिंग या दंगे की वजह भी बन सकती हैं.

हेट स्पीच

इन दिनों हेट स्पीच की घटनाएं भी पूरे उफान पर हैं. सही कानूनी कारवाई का डर न होने से नफ़रती बयान के ज़रिए आवाम को हिंसा के लिए उकसा रहे हैं. नफ़रती बयान के ज़रिए अक्सर किसी ख़ास व्यक्ति, समूह या समुदाय पर हमला किया जाता है. बहुत दफा औरतें और बच्चे भी इन बयानबाज़ियों का शिकार हुए हैं. इससे समाज में किसी व्यक्ति, वर्ग के लिए जानबूझकर डर का माहौल बनाया जाता है. जबकि हेट स्पीच के प्रभाव में लोगों में टकराव, दूरी, मतभेद और नफ़रत बढ़ती है. इसके ज़रिए किसी आबादी को बड़े पैमाने पर हिंसा के लिए भी उकसाया जा सकता है.

फूट डालो और राज करो

हेट स्पीच और झूठी ख़बर का गठजोड़ लोगों को तोड़ने और बांटने के लिए किया जाता है. इस ख़तरनाक सांठगांठ के नतीजे में ख़ून, ख़राबा, हमला और भेदभाव बेहद आम है. अंग्रेज़ों की तर्ज़ पर हमारे नेताओं ने भी यही नीति अपनाई है. चुनाव के क़रीब जनता का ध्यान भटकाने के लिए वो स्वंय या अपने कार्यकर्ताओं द्वारा किसी समुदाय, जाति या धर्म के बारे में अपमानजनक टिप्पणी करते हैं, जिससे असल मुद्दों से जनता का ध्यान भटकाया जा सके. ज़हरीले प्रचार और भाषणों की आंधी में जनता अक्सर अंधी हो जाती है. ऐसे में कोई समूह एक काल्पनिक हमले के डर में हमलावर भी हो सकता है, फिर बचाव में हमला करने का परिणाम एक बड़ी तबाही की शक्ल में सामने आता है. इस बीच नेता अपना वोट साध लेते हैं और कई लोग पहचान की राजनीति में अपना सिक्का चमका लेते हैं, खामियाजा भुगतती है बस आम जनता कई बार दंगों के दौरान जान-माल से हाथ धोने के बाद भी जनता भड़काऊ बयानबाज़ी और नकली ख़बरों का आसान चारा बन रही है. जिसके एवज़ महंगाई, बेरोज़गारी और शिक्षा जैसे मुद्दे के मुक़ाबले धार्मिक और जातीय अस्तित्व ज़्यादा महत्वपूर्ण बन जाता है.

मुल्क में अमन और एकता क़ायम करने का उपाय क्या है?

सबसे पहले तो सूचना के विश्वसनीय स्रोतों को पहचानना होगा जिससे कि हम सतर्क और जागरूक रह सकें. हमें अपने आस-पास के लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करना होगा. इसके बाद भी जो सूचना हम तक पहुंचती है उसकी जांच परख करना हमारी ज़िम्मेदारी का हिस्सा है. यह जानना बेहद जरूरी है कि किसी बात का आधार क्या है और वह कितना प्रमाणिक है.

1. अपने विश्वास को परखें- जिन ख़बरों से नकारात्मक भाव पैदा होते है उनपर संदेह करें और जिन ख़बरों से एकता मज़बूत करने वाली किसी अच्छी मान्यता को नष्ट किया जाता हो उनपर भी संदेह करें. संदेह के बाद जो यकीन जन्मेगा वो हर लिहाज़ से खरा होगा.

2. तर्क का इस्तेमाल करें- भड़काऊ मैसेज को पहचाने। अगर कोई सूचना बहुत सकारात्मक है या बहुत नकारात्मक है तो आगे बढ़ाने से पहले अपनी सूझ-बूझ का इस्तेमाल करे। सूचना का माध्यम क्या है? क्या ये कोई राजनैतिक बयान है ? तो आँख बंद करके ना माने।

3. सबूत तलाशें, तथ्य पुष्ट करें- संबंधित सूचना को गूगल करें. स्त्रोत जांचने के अलावा देखें कि क्या यह सूचना किसी विश्वसनीय चैनल या अख़बार द्वारा प्रमाणित है? क्या इस सूचना की कोई पृष्ठभूमि भी है? क्या दलीलों के साथ फ़ोटो और वीडियो भी हैं? कहीं इनमें कोई छेड़छाड़ तो नहीं की गयी है? कहीं उक्त सूचना का कोई ख़ास हिस्सा ज़रूरत से ज़्यादा प्रचारित तो नहीं किया जा रहा है ? फैक्ट चेकर वेबसाईट्स ऐसे मामलों में काफ़ी मदद कर सकती हैं. सोशल मीडिया पर संदेश फ़ॉरवर्ड करने में ख़ास सावधानी बरतें.

एकता और सौहार्द के साथ रहें! नफ़रत की आग का ईंधन मत बनें! नेताओं को वोट मिलेगा मगर आपका घर जलेगा! कट्टरता, फूट और बिखराव से बचें! साथ जुड़ें, मिलकर चलें !

4. नफ़रती भाषा को पहचानें - सनसनीख़ेज़ भाषा का प्रयोग ख़तरे की पहली घंटी है. हर शब्द का अपना प्रभाव होता है. नफ़रत के सौदागर भाषा की बारीकी से खेलते हैं और लोगों में मौजूद पूर्वाग्रह को मान्यता का नाम देते है क्या किसी ख़ास अंदाज़ या भाषा से आपका खून उबलने लगता है? हां? तो फिर यहां ख़तरा है....जोश और रोष में प्रतिक्रिया से बचे.

5. पूर्वाग्रह की तह में झांकें- क्या ये ख़बर आपके किसी पूर्वाग्रह ताकतवर बनाती है? क्या इस सूचना से पहले से मौजूद कोई धारणा मज़बूत बनती है? अगर हां तो आप इस सूचना का दामन थामे आप ग़लत फ़ैसले भी कर सकते हैं और किसी को नुकसान भी पहुंचा सकते हैं. पूर्वाग्रह पहचानने की प्रक्रिया सवाल करने से शुरू करें. क्या आपका कोई विश्वास सचमुच आपका है या आपने उसे स्कूल, घर या समाज से सीखा है? जब आप अपने भीतर खंगालेंगें तो बाहर की दुनिया को भी बेहतर समझेंगे और एक खूबसूरत समाज के विकास में बेहतर भूमिका अदा कर सकेंगें.